E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

श्रेय और प्रेय का विवेचन

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

'वरस्तु मे वरणीयः स एव' नचिकेता की इस उक्ति से प्रभावित हो यमराज ने आत्म-रहस्य के जिज्ञासु नचिकेता को आत्म-रहस्य समझाने के क्रम में श्रेय और प्रेय का बड़ा ही सुन्दर, सरल, सूक्ष्म, ज्ञानवर्धक, स्वाभाविक और सारगर्भित वर्णन प्रस्तुत किया है।

श्रेय क्या है?

सदा के लिए सब प्रकार के दुःखों से सर्वथा छुटकारा पाकर नित्य आनन्दस्वरूप परमब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त करने का उपाय श्रेय है। श्रेय मार्ग सब प्रकार के दुःखों से मुक्ति प्रदान करता है। अतः मानवजीवन के चरम लक्ष्य निःश्रेयस प्राप्ति का साधनभूत श्रेयमार्ग ही मानवमात्र के लिए स्वीकरणीय है।

प्रेय क्या है?

सांसारिक भोग-विलास की वस्तुओं को प्राप्त करने का वह मार्ग जिससे व्यक्ति जीवन-मरण के दुष्चक्र में आबद्ध हो जाता है, वह प्रेय है। वस्तुतः जो मनुष्य सांसारिक सुखों के साधनों की ओर मुढ़ जाता है, वह मानवजीवन के चरम लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता है और संसार के आवागमन के बन्धन में ही पड़ा रहता है। वह नाना प्रकार के दुःखों का भागी होता है तथा विभिन्न योनियों का भोग भी भोगना पड़ता है।

श्रेय और प्रेय के प्रति आकर्षण-

श्रेय और प्रेय दोनों भिन्न-भिन्न हैं। वे दोनों पृथक्-पृथक् प्रयोजन वाले होने के कारण मनुष्य को तदनुरूप बाँधते हैं। अपवर्गादि लक्षण वाला मार्ग श्रेय है एवं धन, पुत्र, पशु आदि लक्षण वाला मार्ग प्रय है। श्रेय का मार्ग विद्या एवं प्रेय का मार्ग अविद्या है। प्रेयमार्गी जन 'भोगों में प्रत्यक्ष और तत्काल सुख प्राप्त होता है' ऐसा विचार करके उसके विनाशकारी परिणाम का बिना विचार किए, प्रेय मार्ग की ओर

प्रवृत्त हो जाते हैं। परन्तु तत्त्वान्वेषी मनुष्य भगवान् की दया से प्राकृत भोगों की आपातरमणीयता एवं परिणामदुःखता का रहस्य जानकर, उनकी ओर से विरक्त होकर श्रेय की ओर आकर्षित हो जाता है-

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः।

तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते।

श्रेय मार्ग और प्रेय का वरण कौन करता है?

मनुष्य के लिए श्रेय और प्रेय दोनों ही मार्ग खुले रहते हैं। किन्तु विद्वान् पुरुष उन दोनों का विधिवत् विचार कर एवं परिणाम आदि की मीमांसा कर दोनों के अन्तर को समझ लेता है कि श्रेय तो आत्मकल्याणकारी, मोक्षदायी है तथा प्रेय सांसारिक अनित्य सुखकारी है। अतः धैर्यवान् विवेकी पुरुष श्रेयमार्ग को को चुनता है जबकि मन्दबुद्धि पुरुष अप्राप्त की प्राप्ति के लिए एवं प्राप्त की रक्षा के लिए प्रेय का वरण करता है जिससे वह ब्रह्मज्ञान से वञ्चित हो पुनर्जन्म बन्धन के चक्र में फंस जाता है-

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।

श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।।

श्रेयमार्ग पर चलने का फल-

जो श्रेय मार्ग का वरण करता है, वह सब प्रकार के दुःखों से सर्वथा छुटकारा प्राप्तकर अनन्त, असीम एवं आनन्दस्वरूप परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। जो शब्दरहित, स्पर्शरहित, रूपरहित, विकारहीन, रसहीन, गन्धरहित और अविनाशी, नित्य, अनन्त, अचल, महत् तत्त्व से परे परमात्मा को जान लेता है,वह मृत्यु के मुख से छूट जाता है अर्थात् संसार में बार-बार के जन्म मृत्यु के बन्धन से छूट जाता है-

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथारसं नित्यमगन्धवच्च यत्।

अनाद्यन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते।।

प्रेयमार्ग पर चलने का फल-

प्रेय मार्ग पर चलने वाला अविद्या से ग्रस्त रहता है और स्वयं को बुद्धिमान् तथा शास्त्रज्ञ मानता है। ऐसा व्यक्ति न स्वयं का उद्धार कर पाता है और नहीं दूसरे का।ऐसे व्यक्ति अन्धों के द्वारा ले जाए जाते हुए अन्धे की तरह संसार चक्र में भटकते रहते हैं-

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितंमन्यमानाः।

दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

धन के लोभ एवं विषय भोगों के कारण प्रेय मार्ग के पथिक मूर्ख लोग यह मान लेते हैं कि जो कुछ भी है, वह सब यही लोक है, परलोक कल्पनामात्र है अर्थात् परलोक की सत्ता पर उनका तनिक भी विश्वास नहीं होता है। ऐसे लोग ही अपने कर्माकर्म के अनुसार बारम्बार जन्म और मृत्यु के वशीभूत होकर संसारचक्र में फंसे रहते हैं।उन्हें मुक्ति नहीं मिलती-

न साम्परायः प्रतिभाति बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्।

अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे।।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्रेयमार्ग ज्ञान, विद्या और मोक्ष का मार्ग है। इसके विपरीत प्रेय मार्ग अज्ञान और अविद्या का मार्ग है।